

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तसुतपोरत्नोत्कराराधनामाला श्रीजिनसारसूत्रसहिता पूर्व बुधैर्निर्मिता ।
सद्बोधाम्बुधिभिर्जगत्त्रयहितैः सा शर्मणे श्रीप्रभाचन्द्राद्यैस्तदनुग्रहेण सुधिया चक्रे मयापि श्रिये ॥२१॥
इति कथाकोशे शकटालमुनेराख्यानं समाप्तम् ।

८३. श्रद्धाख्यानम्

विशुद्धकेवलज्ञान-प्रकाशितजगत्त्रयम् । नत्वा जिनं प्रवक्ष्यामि श्रद्धाख्यानं सतां प्रियम् ॥१॥
कुरुजांगलसद्देशे हस्तिनागपुरे शुभे । विनयधरभूपालो विनयादिवती प्रिया ॥२॥
श्रेष्ठी वृषभसेनाख्यस्तन्नाम्नी श्रेष्ठिनी मता । तयोः पुत्रस्तु संजातो जिनदासो गुणोज्ज्वलः ॥३॥
एकदा तस्य भूभर्तुः कामासक्तस्य कर्मतः । महाव्याधिः समुत्पन्नो भूरिकामो न शान्तये ॥४॥
वैद्या न शक्नुवन्ति स्म तं व्याधिं संचिकित्सितुम् । पीडितस्तेन भूनाथो दुर्जनेन च पापिना ॥५॥
ततः सिद्धार्थसन्नाम्ना शुद्धश्रावकमंत्रिणा । पादौषधमुनेः पादप्रक्षालनजलं शुभम् ॥६॥
दत्तं तस्मै नरेन्द्राय सर्वव्याधिविनाशकम् । श्रीजिनेन्द्रपदाम्भोजचंचरीकेण निर्मलम् ॥७॥

इन सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तत्परूप रत्नों की सुन्दर माला को प्रभाचन्द्र आदि पूर्वाचार्यों ने शास्त्रों का सार लेकर बनाया है, जो ज्ञान के समुद्र और सारे संसार के जीव मात्र का हित करने वाले थे । उन्हीं की कृपा से मैंने इस आराधनारूपी माला को अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार बनाया है । यह माला भव्यजनों को और मुझे सुख दे ॥२१॥

८३. श्रद्धायुक्त मनुष्य की कथा

निर्मल केवलज्ञान द्वारा सारे संसार के पदार्थों को प्रकाशित करने वाले जिन भगवान् को नमस्कार कर श्रद्धागुण के धारी विनयधर राजा की कथा लिखी जाती है जो कथा सत्पुरुषों को प्रिय है ॥१॥

कुरुजांगल देश की राजधानी हस्तिनापुर का राजा विनयधर था । उसकी रानी का नाम विनयवती था । यहाँ वृषभसेन नाम का एक सेठ रहता था । उसकी स्त्री का नाम वृषभसेना था । उसके जिनदास नाम का एक बुद्धिमान् पुत्र था ॥२-३॥

विनयधर बड़ा कामी था । सो एक बार इसके कोई महारोग हो गया । सच है, ज्यादा मर्यादा से बाहर विषय सेवन भी उल्टा दुःख का ही कारण होता है । राजा ने बड़े-बड़े वैद्यों से इलाज करवाया पर उसका रोग किसी तरह न मिटा । राजा इस रोग से बड़ा दुःखी हुआ । उसे दिन-रात चैन न पड़ने लगा ॥४-५॥

राजा का एक सिद्धार्थ नाम का मंत्री था । यह जैनी था । शुद्ध सम्यग्दर्शन का धारक था । सो एक दिन उसने पादौषधिऋद्धि के धारक मुनिराज के पाँव प्रक्षालन का जल लाकर, जो कि सब रोगों का नाश करने वाला होता है, राजा को दिया । जिन भगवान् के सच्चे भक्त उस राजा ने बड़ी श्रद्धा के साथ उस जल को पी लिया उसे पीने से उसका सब रोग जाता रहा । जैसे सूरज के उगने

श्रद्धादिगुणसंयुक्तो विनयंधरभूपतिः। पीत्वा तज्जलमत्युच्चैः संजातो रोगवर्जितः ॥८॥
 तज्जलास्वादनादेव गतो व्याधिः प्रवेगतः। भास्करस्योदये शीघ्रं प्रयात्येव यथा तमः ॥९॥
 प्रभावः श्रीमुनीन्द्राणां तपसः केन वर्ण्यते। यत्पादक्षालनं तोयं सर्वव्याधिक्षयप्रदम् ॥१०॥
 यथा सिद्धार्थमन्त्री च सत्तोयं भूभुजे ददौ। तथा भव्यैः प्रदातव्यं धर्मपानीयमङ्गिनाम् ॥११॥
 स श्रीपादौषधः स्वामी मुनीन्द्रो गुणसागरः। अस्तु मे शर्मणे नित्यं जैनतत्त्वविदांवरः ॥१२॥
 श्रद्धा श्रीजिनधर्मकर्मणि सतां दुःखौघविध्वंसिनी। देवेन्द्रादिनरेन्दचक्रिपदवीशर्मप्रदास्तोकतः ॥
 बाहुल्येन करोति या शुभतरा सत्केवलद्योतनं। व्यक्तानन्तचतुष्टयं शिवकरं सा शर्मणे वास्तु वै ॥१३॥

इति कथाकोशे श्रद्धाख्यानं समाप्तम्।

८४. स्वात्मनिन्दाफलाख्यानम्

सर्वदेवेन्द्रचन्द्राद्यैः पूजितं श्रीजिनेश्वरम्। संप्रणम्य प्रवक्ष्येहं स्वात्मनिन्दाफलोत्करम् ॥१॥
 काशीदेशे सुविख्याते पूते वाराणसी पुरे। राजा विशाखदत्तोभूतद्राज्ञी कनकप्रभा ॥२॥
 चित्रकारो विचित्राख्यो नानाचित्रविधायकः। विचित्रादिपताकाख्या तस्य भार्या बभूव च ॥३॥
 तयोर्बुद्धिमती पुत्री संजाता सुविचक्षणा। एकदा तस्य भूपस्य मन्दिरे वातिसुन्दरे ॥४॥

से अन्धकार जाता रहता है। सच है, महात्माओं के तप के प्रभाव को कौन कह सकता है, जिनके कि पाँव धोने के पानी से ही सब रोगों की शान्ति हो जाती है। जिस प्रकार सिद्धार्थ मन्त्री ने मुनि के पाँव प्रक्षालन का पवित्र जल राजा को दिया, उसी प्रकार अन्य भव्यजनों को भी उचित है कि वे धर्मरूपी जल सर्व-साधारण को देकर उनका संसार ताप शान्त करें। जैनतत्त्व के परम विद्वान् वे पादौषधिऋद्धि के धारक मुनिराज मुझे शान्ति-सुख दें ॥६-१२॥

जैनधर्म में या जैनधर्म के अनुसार किए जाने वाले दान, पूजा, व्रत, उपवास आदि पवित्र कार्यों में की हुई श्रद्धा, किया हुआ विश्वास दुःखों का नाश करने वाला है। इस श्रद्धा का आनुषङ्गिक फल है-इन्द्र, चक्रवर्ती, विद्याधर आदि की सम्पदा का लाभ और वास्तविक फल है मोक्ष का कारण केवलज्ञान, जिसमें कि अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य ये चार अनन्तचतुष्टय-आत्मा की खास शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं। वह श्रद्धा आप भव्यजनों का कल्याण करे ॥१३॥

८४. आत्मनिन्दा करने वाली की कथा

चारों प्रकार के देवों द्वारा पूजे जाने वाले जिन भगवान् को नमस्कार कर उस स्त्री की कथा लिखी जाती है कि जिसने अपने किए पापकर्मों की आलोचना कर अच्छा फल प्राप्त किया है ॥१॥

बनारस के राजा विशाखदत्त थे। उनकी रानी का नाम कनकप्रभा था। इनके यहाँ एक चितेरा रहता था। इसका नाम विचित्र था। वह चित्रकला का बड़ा अच्छा जानकार था। चितेरे की स्त्री का नाम विचित्रपताका था। उसके बुद्धिमती नाम की एक लड़की थी। बुद्धिमती बड़ी सुन्दरी और चतुर थी ॥२-४॥